

પાઠ-૨

સાત તત્ત્વ

પ્રકાશ છાબડા, યંગ જૈન સ્ટડી ગ્રુપ, ઇન્દૌર



99260-40137

संसार के सभी
जीव क्या
चाहते हैं?

सुख

सभी किससे
बचना चाहते
हैं?

दुःख से

फिर दुःख दूर
क्यों नहीं होता?

○ प्रयोजनभूत सात तत्त्वों
की सही जानकारी व श्रद्धा
के न होने से

प्रयोजन
क्या है?

○दुःख दूर हो
○सुख हो

तत्त्व किसे कहते हैं?

- जो वस्तु जैसी है उसका जो भाव
- तत् + त्व = वह + भाव
- श्रद्धान करने योग्य अर्थ का भाव

तत्त्व कितने होते हैं?

तत्त्व 7
होते हैं

7 तत्त्व कौन-कौन से हैं?

मोक्ष

जीव

अजीव

निर्जरा

आस्रव

संवर

बंध

सामान्य से तत्त्व कितने हैं?

दो ही

जीव

अजीव

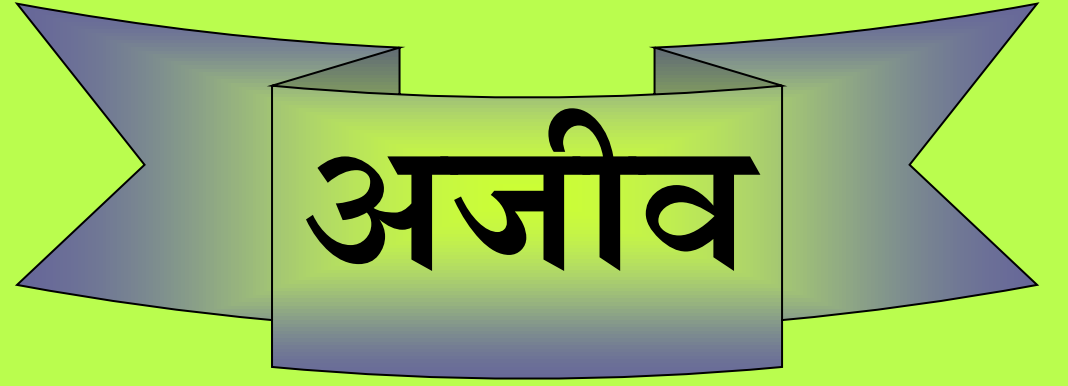
आस्रवादि जीव
अजीव के ही
विशेष (पर्याय) हैं

सात तत्त्वों का स्वरूप



○ ज्ञान-दर्शन स्वभावी आत्मा को
कहते हैं

○ वह चेतन तत्त्व आत्मा ही मैं हूँ



○ ज्ञान-दर्शन स्वभावी आत्मा से रहित

○ तथा आत्मा से भिन्न समस्त

पुद्गलादि पाँच द्रव्य

इन आस्रवादि प्रत्येक के दो प्रकार हैं -

भाव



जीव के
विशेष

द्रव्य



अजीव (कर्म)
के विशेष

आस्रव

बंध

संवर

निर्जरा

मोक्ष

द्रव्य

भाव

द्रव्य





आस्रव-बन्ध

संवर



निर्जरा



भाव

शुभ-अशुभ भावों

की उत्पत्ति - आस्रव
का बने रहना - बन्ध

शुद्ध भावों की

उत्पत्ति - संवर
वृद्धि - निर्जरा
पूर्णता - मोक्ष

आस्रव

○ जिन मोह-राग-द्वेष
भावों से

○ इनके निमित्त से
ज्ञानावरणादि

ज्ञानावरणादि कर्म

कर्मों का आना

आते हैं, उन मोह-

द्रव्यास्रव है ।

राग-द्वेष भावों को तो

भावास्रव कहते हैं ।

बंध

○आत्मा का
अज्ञान, मोह-राग-
द्वेष, पुण्य-पाप
आदि विभाव भावों
में रुक जाना सो
भाव-बंध है

○उसके निमित्त से
पुद्गल का
कर्मरूप बंधना सो
द्रव्य-बंध है ।

आस्रव-बंध के विशेष

शुभ राग से

पुण्य का

अशुभ राग,
द्वेष व मोह से

पाप का

संवर

○ मोहादि भावों का
आत्मा के शुद्ध
(वीतरागी) भावों
से रुकना सो
भाव- संवर है।

○ इन भावों के
निमित्त से नये
कर्मों का आना
रुक जाना
द्रव्य-संवर है।

निर्जरा

○ शुद्ध (वीतरागी)

भावों की वृद्धि

○ अशुद्ध (शुभाशुभ)

भावों का आंशिक

अभाव हो सो

भाव-निर्जरा है ।

○ उसका निमित्त

पाकर जड़ कर्म

का अंशतः खिर

जाना सो द्रव्य-

निर्जरा है ।

मोक्ष

○ अशुद्ध दशा का
सर्वथा सम्पूर्ण
अभाव होकर

○ आत्मा की पूर्ण
निर्मल पवित्र दशा
का प्रकट होना
भाव-मोक्ष है

○ निमित्त कारण

द्रव्यकर्म का
सर्वथा नाश
(अभाव) होना सो
द्रव्य-मोक्ष है ।

तत्त्व 7 ही क्यों?

- उक्त सातों के यथार्थ श्रद्धान बिना मोक्षमार्ग नहीं बन सकता है
- जीव और अजीव को जाने बिना अपने-पराये का भेद-विज्ञान कैसे हो ?
- जिसे सुखी करना है ऐसे जीव को जानना, जिसके साथ सुखी करने का भ्रम हो सकता है ऐसे अजीव को जानना

तत्त्व 7 ही क्यों?

मोक्ष

○मोक्ष को पहिचाने बिना और हितरूप माने बिना
उसका उपाय कैसे करें?

संवर-निर्जरा

○मोक्ष का उपाय संवर-निर्जरा है, अतः उनका
जानना भी आवश्यक है।

तत्त्व 7 ही क्यों?

आस्रव-बंध

○ तथा आस्रव का अभाव सो संवर है और बंध का एकदेश अभाव सो निर्जरा है; अतः इनको जाने बिना इनको छोड़ संवर-निर्जरारूप कैसे प्रवर्त्ते ?

हेय – ज्ञेय – उपादेय

आस्रव-बंध

हेय

संवर-निर्जरा

एकदेश उपादेय

मोक्ष

पूर्ण उपादेय

जीव

परम उपादेय (आश्रय करने योग्य)

अजीव

ज्ञेय (पर हैं)